PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 6, ISSUE 3

सतत एवं व्यापक आंकलन : एक मूल्यांकन प्रविधि

बाल मुकुन्द पाल
एम. ए. मनोविज्ञान, एम. एड., शिक्षा विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,
वर्धा. 442001
महाराष्ट्र भारत

सारांश :

सतत एवं व्यापक आंकलन (सी.सी.ए.) केवल बालकों की प्रगति एवं उपलब्धि का ही आंकलन नहीं करता है, बल्कि यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, शिक्षण-सामग्री एवं शिक्षण-विधियों, जोकि पाठ्यचर्या के सम्पादन में प्रयोग की जाती हैं तथा उसके प्रभाव का भी आंकलन करता है। सतत एवं व्यापक आंकलन सम्पूर्ण पाठ्यचर्या अर्थात विद्यार्थी के सम्पूर्ण विद्यालयी जीवन का आंकलन बिना किसी दबाव के प्रस्तुत करता है। यह पाठ्यचर्या का अभिन्न घटक है। प्रभावशाली निष्पादन तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु यह विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि विद्यार्थीगण परीक्षा के नाम से ही भयभीत होते हुये न चाहकर भी अपने ऊपर दबाव महसूस करते हैं तथा अध्यापकों के ऊपर भी परीक्षा को सकुशल सम्पन्न कराने का दबाव बना रहता है। लेकिन यदि परीक्षा-संस्कृति को वर्ष के अंत के बजाय पूरे वर्ष सतत एवं व्यापक आंकलन के रूप में परिवर्तित कर दिया जाय, तो निःसन्देह अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों आपस में मिलकर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करते हुये अधिगम स्तर को उच्च कर सकते हैं। अतः वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों दोनों के अंदर से वार्षिक परीक्षा के मनोवैज्ञानिक दबाव को दूर निकालने में सतत एवं व्यापक आंकलन की महती आवश्यकता है। उक्त को ध्यान में रखते हुये इस शोध-लेख का मुख्य उद्देश्य सतत एवं व्यापक आंकलन की आवश्यकता तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करके शोधार्थी द्वारा अपने निर्वचन को प्रस्तुत किया गया है।

बीज-शब्द : सी.सी.ए. की अवधारणा, सी.सी.ए. की आवश्यकता, सी.सी.ए. के महत्त्वपूर्ण तथ्य तथा सी.सी.ए. की प्रासंगिकता।

प्रस्तावना :

अधिकांश अवसरों पर हम आंकलन या स्वरूप-स्थिति निर्धारण को इस प्रकार देखते हैं कि यह कुछ ऐसा है, जो शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के लिए अधिगम के अंतिम चरण (वर्ष के अंत) में आयोजित किया जाता है। जब

आंकलन को अधिगम के अभ्यास के अंतिम रूप में देखा जाता है, तो शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही इसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से बाहर रखते हैं तथा पाठ्यचर्या से इसका कुछ संबंध नहीं कर पाते हैं। यह विचार शिक्षार्थियों में दबाव एवं तनाव पैदा करता है। दूसरी ओर जब आंकलन को शिक्षण-अधिगम का एक अटूट अंग समझा जाता है तो यह एक निरंतर वर्षपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया बन जाती है (पाण्डेय, 2007)। अधिगमकर्त्ताओं के सीखने की हर परिस्थिति अध्यापक के आंकलन की भी एक परिस्थिति होती है। सतत एवं व्यापक आंकलन को जब शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है तो शिक्षार्थी परीक्षा से डरते नहीं, बल्कि इससे वो अपनी क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करते हैं। जब अध्यापक को शिक्षार्थियों की क्षमताओं या कमजोरियों के बारे में पता चलता है तो उसके बाद उसके निदान की प्रक्रिया आसान हो जाती है। विद्यालयों में आंकलन का क्षेत्र शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व विकास के सभी पक्षों तक फैला हुआ है। इसमें शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्र सम्मिलित होते हैं, इसलिए यह समग्र कहलाता है। उदाहरण के तौर पर गणित में स्कोर या ग्रेड से विषय संबन्धित शैक्षिक क्षमता, विषय के प्रति मनोवृत्ति, विषय में रुचि इत्यादि सह-शैक्षिक क्षमता का भी पता चलता हैं। दोनों पक्ष अन्तः संबन्धित हैं तथा शिक्षा के उद्देश्यों के प्रति पंक्तिबद्ध हैं। अगर आंकलन सतत है तो अधिगमकर्त्ताओं की मजबूतियां एवं कमजोरियां भली-भांति सामने आती है तथा उन्हें समझने तथा अपने आप को सुधारने का अवसर मिलता है। इससे शिक्षकों को भी अपनी शिक्षण पद्धति को रूपांतरित करने के लिए पुनर्बलन मिलता है। सतत एवं व्यापक आंकलन में आंकलन की प्रक्रिया शिक्षण अधिगम की व्यवस्था को चुस्त एवं प्रभावी बनाने में प्रायः एक नियामक की भूमिका अदा करती है। इससे बाह्य परीक्षाओं के अतिशय दबाव के चलते छात्रों में जो कुंठा एवं असंतोष का भाव मुखर हुआ है, अब इसका स्थानापन्न तलाशने की जोरदार कोशिश हो रही है। सतत एवं व्यापक आंकलन की अवधारणा इसी संदर्भ में विकसित हुई है। अब शनैःशनैः इस अवधारणा को शैक्षणिक व्यवस्थाओं के साथ अभिन्न रूप से जोड़ा जा रहा है तथा इसे शिक्षण प्रक्रिया का समवर्ती अंग बनाए जाने की चेष्टा हर स्तर पर दृष्टिगत हो रही है। सतत एवं व्यापक आंकलन की अवधारणा को शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाओं में अभिन्न स्थान देने के पीछे यह मत अथवा दर्शन अधिक हावी रहा है कि एक युक्ति एवं उपकरण के रूप में उपकल्पित करते हुए शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को जीवंत, सार्थक, गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी बनाया जाए। यह उभरते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी एक अति महत्वपूर्ण युक्ति का स्थान ग्रहण कर चुका है।

सी.सी.ए. की अवधारणा :

सतत एवं व्यापक आंकलन से तात्पर्य आंकलन द्वारा शिक्षण के परिणामों एवं उनसे संबंधित प्रक्रियाओं के आकलन पर बल देने से है। जब यह आंकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनकर उसे नियमित रूप से संगत दिशा एवं उत्तरोत्तर गतिशीलता प्रदान करता है तो इसे सतत आंकलन का नाम दिया जाता है। हमारे यहाँ आंकलन का मुख्य औज़ार परीक्षाओं को माना जाता है जो प्रायः सत्र के अंत में आयोजित की जाती है। इस व्यवस्था को बदलकर जब आंकलन को शैक्षणिक क्रियाकलापों से निरंतरता के आधार पर जोड़ दिया जाए तो इसे ही सतत आंकलन की संज्ञा दी जाएगी। इसी प्रकार आंकलन के अंतर्गत केवल संज्ञानात्मक पक्ष पर ही ज़ोर न देकर शैक्षणिक व्यवस्थाओं द्वारा पड़ने वाले संज्ञानेतर पक्षों पर प्रभाव यथा कौशल, रुचि, अभिवृत्ति मूल्य एवं व्यक्तित्व विकास के आकलन को भी आंकलन की परिधि में लाया जाए तो इसे व्यापक आंकलन कहा जाता है।

इन दोनों की अवधारणों को संयुक्त करते हुए एक नवीन संप्रत्यय के रूप में सतत एवं व्यापक आंकलन की प्रणाली का अभ्युदय हुआ है। आंकलन एक सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। कक्षा में प्रतिदिन शिक्षण के दौरान, पाठ की समाप्ति पर, प्रकरण की समाप्ति पर, प्रत्येक मास में, सत्र के मध्य में अथवा सत्रांत पर छात्रों की शैक्षिक प्रगति का आंकलन करके किया जा सकता है। सतत एवं समग्र आंकलन यह सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है कि अधिगमकर्त्ताओं के अधिगम का निष्पादन सृजनात्मक एवं संकलनात्मक आंकलन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों जैसे मानसिक, भावात्मक एवं क्रियात्मक में हो रहा है जिससे अधिगमकर्त्ताओं का सभी प्रकार से सम्पूर्ण विकास होता है। सतत एवं व्यापक आंकलन का अर्थ यह कदापि नहीं है कि अधिगमकर्त्ताओं की वार्षिक, अर्धवार्षिक और सत्र परीक्षाओं के अतिरिक्त मासिक, पाक्षिक या साप्ताहिक परीक्षाएं ली जाए। बच्चे के विकास का सतत आंकलन एक सामयिक घटना (सत्र परीक्षा या वार्षिक परीक्षा) नहीं होती वरन् यह शैक्षणिक सत्र की समूची अवधि में लगातार चलती है। दूसरी ओर व्यापक का आशय अकादमिक प्रगति के साथ उसके जीवन कौशलों मूल्यों आदि में परिवर्तन होने से है। व्यापकता का तत्व समाहित किये बिना अधिगमकर्त्ताओं के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि अधिगमकर्त्ताओं के शारीरिक विकास, नियमित उपस्थिति, खेलों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, सृजनात्मकता आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के क्रमिक विकास का सतत आंकलन किया जाता है।

भारत में सी.सी.ए. का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

भारत में सतत एवं व्यापक आंकलन का विकास यहां की परीक्षा प्रणाली के प्रति असंतोष एवं उसकी अविश्वसनीयता से जुड़ी कहानी है। सन् 1947 ई॰ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गठित विविध शिक्षा आयोग एवं समितियां समय-समय पर इस असंतोष को अभिव्यक्त करती रही हैं। यद्यपि डॉ॰ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) तथा डॉ॰ मुदालियार की संरक्षता में गठित माध्यमिक विद्यालय आयोग (1953) ने प्रचलित परीक्षाओं की अविश्वसनीयता एवं उनके दुष्परिणामों पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, किन्तु इनमें सुधार लाने हेतु स्पष्ट एवं मुखर संस्तुति को कोठारी आयोग (1964-66) द्वारा ही बल प्राप्त हो सका। अवधारणा, प्रक्रिया तथा आवश्यकता शिक्षार्थी के पूर्ण विकास का निश्चय रखती है। इसलिए सतत एवं समग्र आंकलन अधिगमकर्त्ताओं के बौद्धिक, भावात्मक एवं विकास को ध्यान में रखकर किया जाता है। बौद्धिक विकास से अभिप्राय है- अधिगमकर्त्ताओं का मानसिक विकास जैसे: बच्चे का ज्ञान, समझ, विश्लेषण, संश्लेषण तथा आंकलन और भावात्मक विकास यथा : विद्यार्थियों की मनोवृत्तियों, रुचियों तथा व्यक्तिगत विकास । क्रियात्मक विकास का संबंध अधिगमकर्त्ताओं की कुछ क्रिया करने या प्रायोगिक कार्य करने की क्षमता से है। इसलिए यदि शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के द्वारा बहुमुखी विकास सुनिश्चित किया जाता है तो विद्यार्थियों का आंकलन सतत एवं समग्र होना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं अधिगमकर्त्ताओं के सम्पूर्ण विकास के लिए आंकलन की प्रक्रिया को विकास के शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है। समग्र आंकलन में पूरे शैक्षिक वर्ष में निश्चित अवधियों पर निरन्तरता का होना भी आवश्यक है। सतत एवं समग्र आंकलन शिक्षा के शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक दोनों पक्षों का निर्धारण करके अधिगमकर्त्ताओं का सम्पूर्ण प्रोफाइल देता है। इससे विभिन्न संदर्भों में अधिगमकर्त्ताओं की छुपी हुई योग्यता की पहचान करता है,

अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धियों के स्तर को ऊंचा करने की पद्धतियाँ पहचानता है तथा विद्यालयों के सुधार हेतु समग्र आंकलन कार्यक्रम की योजना बनाता है। सतत एवं समग्र आंकलन, आंकलन के लिए उपयुक्त यंत्र एवं प्रभावशाली तकनीकियों का सुझाव देता है। विद्यालय एवं विद्यार्थियों के निरंतर सुधार के लिए आंकलन को एक यंत्र की तरह प्रयोग किया जाता है। यह विद्यालय के प्रशासकों, अभिभावकों तथा समुदाय को सतत एवं समग्र आंकलन के प्रति संवेदनशील बनाने के रास्ते एवं पद्धतियों का सुझाव देता है। (सतत एवं समग्र आंकलन : शिक्षकों के लिए मैनुअल, सी. बी. एस. ई. 2010)।

सी.सी.ए. की आवश्यकता :

शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई.- 2009) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.- 2005) दोनों में यह बार-बार कहा गया है कि बच्चे के अनुभव को महत्त्व मिलना चाहिए एवं उसकी गरिमा सुनिश्चित की जानी चाहिए। परन्तु यह तब तक पूर्णतया संभव नहीं है जब तक कि प्रचलित आंकलन पद्धति में परिवर्तन न किया जाए। वर्तमान आंकलन व्यवस्था में किसी समय विशेष पर लिखित परीक्षा की व्यवस्था है, जबकि छात्र की संवृद्धि एवं विकास सम्पूर्ण सत्र में विकसित होता है। इस तरह के आंकलन से कुछ अधिगमकर्त्ताओं को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। परीक्षाओं से यह तो पता चलता है कि बच्चे कितना जानते हैं, पर यह नहीं पता चलता है कि जो नहीं जानते, उनके न जानने के क्या कारण हैं। इस तरह का आंकलन पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ाई गई विषयवस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी तथा ज्ञान का आंकलन करने तक ही सीमित है। आंकलन से अभिप्राय है- किसी घटना के बारे में एक विशिष्ट समयावधि में एकत्रित मात्रात्मक एवं गुणात्मक सूचनाओं के आधार पर मूल्य निर्धारण करना। निर्धारण एक ऐसी विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी पदार्थ या लक्ष्य से संबंधित कोई सूचना प्राप्त की जाती है। निरंतर या सतत का अर्थ है- विद्यार्थी की बढ़त एवं विकास के आयामों का सतत प्रवाह। आंकलन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है न कि एक घटना। यह शिक्षण-अधिगम की पूरी प्रक्रिया में अंतर्निहित है तथा शैक्षिक सत्र की पूरी अवधि में फैली हुई है। इसका अर्थ है- शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को उनके स्वयं आंकलन के लिए निर्धारण की नियमितता, इकाई परीक्षण की प्रयुक्तता, अधिगम की कमियों का निदान, सुधारात्मक कार्य का उपयोग, पुनः परीक्षण तथा प्रमाण का पुनर्निर्माण। शब्द समग्र का अर्थ है कि यह प्रक्रिया अधिगमकर्त्ताओं को बढ़त एवं विकास के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक दोनों पक्षों को समाहित करने का प्रयास करता है। क्योंकि योग्यताओं, रुचियों, मनोवृत्तियों तथा अनुवृत्तियों को विभिन्न रूपों तथा क्रियाओं में देखा जा सकता है। शब्द समग्र से अभिप्राय कई प्रकार के यंत्रों एवं तकनीकियों के प्रयोग करने के उद्देश्य से है, जिसमें विद्यार्थियों के अधिगम विकास का निर्धारण जैसे ज्ञान, समझ, लागू करना, विश्लेषण करना, आंकलन करना, सृजन तथा नयापन इत्यादि किया जाता है। इसलिए हम सतत एवं समग्र आंकलन को परिभाषित कर सकते हैं कि सतत एवं समग्र आंकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों जैसे मानसिक, भावात्मक तथा क्रियात्मक क्षेत्रों में अधिगमकर्त्ताओं के पूर्ण विकास हेतु सृजनात्मक एवं संकलनात्मक दोनों प्रकार के आंकलन द्वारा विद्यार्थियों का अधिगम निष्पादन सुनिश्चित किया जाता है (गुप्ता, 2009)। प्रारम्भिक विद्यालयों में चल रहे आंकलन की प्रक्रिया में छात्र पाठ्य-सामग्री का अभ्यास करके प्रश्नों के उत्तर का हल करते हैं। क्या यह अधिगमकर्त्ताओं के बारे में पूर्ण जानकारी देता है कि उसे विषयवस्तु के बारे में

कितना ज्ञान और समझ विकसित हुई है तथा क्या वह वास्तविक जीवन में उस ज्ञान को लागू कर सकता है? क्या इस प्रकार का आंकलन प्रश्नों की क्षमता के बारे में कुछ बताता है? क्या ये हमें शिक्षक होने के नाते कुछ अच्छा करने में सहायता कर सकता है? क्या आंकलन का परिणाम शिक्षकों तथा योजना बनाने वालों को शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में सहायता करता है? हमें इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर नहीं मिलते हैं। इसलिए सतत एवं समग्र आंकलन की आवश्यकता साफ नजर आती है तथा हम कह सकते हैं कि सतत एवं समग्र आंकलन की नितांत आवश्यकता है।

सी.सी.ए. के महत्त्वपूर्ण तथ्य :

सतत एवं समग्र आंकलन अधिगमकर्त्ताओं का विद्यालयी आंकलन है, जो अधिगमकर्त्ताओं के विकास के सभी पक्षों को सम्मिलित करता है। सतत एवं समग्र आंकलन का सतत पक्ष आंकलन की निरंतरता एवं अपवर्तन का ध्यान रखता है। निरंतरता से अभिप्राय है कि शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य के आरम्भ में तथा शिक्षण कार्य के दौरान भी आंकलन करना। अनौपचारिक रूप से आंकलन की बहु तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है। निर्धारित समय अवधि से अभिप्राय है कि निष्पादन का निर्धारण अक्सर इकाई सत्र के एक भाग के अंत में कुछ मानकों का प्रयोग करने से है। सतत एवं समग्र आंकलन का समग्र भाग अधिगमकर्त्ताओं के व्यक्तित्व के हर भाग का ध्यान रखता है। इसमें विद्यार्थी की बढ़त के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक दोनों पक्ष सम्मिलित होते हैं। शैक्षिक पक्षों में विषय विशेष क्षेत्र सम्मिलित हैं, जबकि सह-शैक्षिक में व्यक्तिगत व सामाजिक विशेषताएं, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां, अभिवृत्तियाँ एवं मूल्य सम्मिलित हैं। शैक्षिक क्षेत्र में निर्धारण औपचारिक एवं अनौचारिक विधियों से आंकलन की बहु-तकनीकियों का प्रयोग कर लगातार तथा कई बार निर्धारित समय अवधि पर किया जाता है। निदानात्मक आंकलन एक इकाई या सत्र के एक भाग के अंत में एक टेस्ट के रूप में होता है। निदानात्मक परीक्षणों का प्रयोग कर निम्न निष्पादन के क्षेत्रों का निदान किया जाता है। इसके बाद उपयुक्त शैक्षिक उपचार देकर दोबारा केवल परीक्षण लिया जाता है। सह-शैक्षिक क्षेत्रों का निर्धारण बहु-तकनीकों का प्रयोग कर पहचाने गए वर्गों के आधार पर किया जाता है, जबकि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का निर्धारण, निर्धारण एवं चैक लिस्ट के सूचकों के आधार पर किया जाता है। (पोजीशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप एक्जामिनेशन रिफ़ार्मस्, 2009)

सी.सी.ए. के उद्देश्य :

सतत एवं व्यापक आंकलन का प्रमुख उद्देश्य- विद्यार्थी के व्यक्तित्व के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्षों के विकास में सहायता करना है। यह विचार करने की प्रक्रिया पर ज़ोर देता है तथा परीक्षा प्रणाली के मानसिक दबाव को कम करता है। यह आंकलन प्रक्रिया को शिक्षण अधिगम क्रिया का एक आवश्यक भाग बनाता है। इसके अंतर्गत आंकलन को विद्यार्थियों के नियमित निदान तथा उपचारात्मक परीक्षण के आधार पर उपलब्धि तथा शिक्षण अधिगम विधियों के सुधार हेतु प्रयोग किया जाता है। इसमें आंकलन को वास्तविक निष्पादन एवं वांछित निष्पादन के बीच में रह गयी कमियों को दूर करने के लिए एक गुणात्मक नियंत्रण यंत्र की तरह प्रयोग किया जाता है तथा निष्पादन का एक वांछित स्तर रखने के लिए भी प्रयास किया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थी अधिगम की प्रक्रिया एवं अधिगम पर्यावरण के बारे में उपयुक्त नियंत्रण लाने के लिए तथा मूल्यांकन प्रक्रिया को

एक अधिगम केन्द्रित क्रिया बनाने के लिए सतत एवं व्यापक आंकलन का प्रयोग किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि सतत एवं समग्र आंकलन का जोर विद्यार्थियों के मानसिक, भावात्मक, शारीरिक तथा सामाजिक विकास को सुनिश्चित करके लगातार विकास पर होता है। इसलिए वह शिक्षार्थी की केवल शैक्षिक उपलब्धियों के निर्धारण तक सीमित नहीं होता है। सतत एवं समग्र आंकलन प्रक्रिया का प्रयोग शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों को पुनर्बलन देने के लिए किया जाता है। ताकि वे अधिगम को बेहतर बनाने के लिए उपयुक्त प्रयासों में बदलाव कर सकें। यह अधिगमकर्त्ताओं को प्रेरणा भी प्रदान करता है तथा उनके प्रोफाइल का समग्र चित्र देता है। एक शिक्षक होने के नाते शिक्षक को विद्यार्थी का आंकलन करते हुए, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, का सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

सी.सी.ए. में प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण प्रविधि :

पाल (2018) के शब्दों में सतत एवं व्यापक आंकलन के अंतर्गत मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण हेतु निम्नलिखित उपकरणों एवं तकनीकों का प्रयोग करते हैं-

मात्रात्मक	गुणात्मक
उपलब्धि परीक्षण	अवलोकन, साक्षात्कार, पोर्टफोलियो, केस अध्ययन,
सर्वेक्षण	परियोजना कार्य
प्रश्न श्रंखला	फोकस समूह चर्चा (FGD)
पूर्व परीक्षण	क्षेत्र नोट्स, डायरी का अध्ययन करके पता लगाना
पश्च परीक्षण	वीडियो, आडियो रिकार्डिंग के द्वारा ज्ञान का पता लगाना
उपलब्ध डाटा बेस	चित्र के द्वारा पूर्व ज्ञान का पता लगाना दस्तावेज़, रिपोर्ट, सभा के मिनट्स इत्यादि

यदि कई स्रोतों से आंकड़ें एकत्र किए जाएं तो अधिगम के बारे में फैसले समृद्ध होते हैं तथा हर बच्चे के लिए परिणाम अच्छा निकलता है। बहु स्रोतों में सामान्य सृजनात्मक एवं संकल्पनात्मक निर्धारण, निष्पादन निर्धारण, अवलोकन कार्य के नमूने, पोर्टफोलियो, दत्त-कार्य परियोजनाएं तथा स्व-रिपोर्ट इत्यादि सम्मिलित है। बहुस्रोतीय आंकड़ें अधिगमकर्त्ताओं का एक संतुलित एवं समग्र विश्लेषण प्रदान करते हैं। जोकि एक प्रकार के आंकड़ें या स्रोत नहीं दे पाते। शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि मात्र आंकड़ें शिक्षण अधिगम के बारे में निर्णय लेने तथा शिक्षण विधियों को प्रभावी बनाने के लिए कुछ नहीं कर सकते। आंकड़ों का विश्लेषण एवं दुबारा से जांच अधिगम के बारे में निर्णय लेने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त समस्त विश्लेषणों से स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अधिकांश संस्थाओं में केवल अधिगमकर्त्ताओं की अकादमिक प्रगति का आंकलन होता है, जबकि अधिगमकर्त्ताओं के सर्वांगीण विकास में अकादमिक प्रगति के साथ-साथ उसकी अभिवृत्तियों, अभिरुचियों, जीवन-कौशलों, मूल्यों तथा मनोवृत्तियों में होने वाले परिवर्तनों का भी समान महत्व होता है। उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि वर्तमान विद्यालयों में शिक्षण आंकलन व्यवस्था में व्यापक व्यवस्थागत सुधारों की जरूरत है। आंकलन की प्रक्रिया कक्षाओं में चल रही, सीखने-सिखाने की ही एक प्रक्रिया है एवं आंकलन के वही तरीके अच्छे होते हैं जो अधिगमकर्त्ताओं के सीखने की गति और सीखने के तरीकों के अनुरूप होते हैं। अतः वर्तमान सामाजिक-शैक्षिक दौर में सतत एवं व्यापक आंकलन की महती आवश्यकता है।

संदर्भ :

1. पाण्डेय, के. पी. (2007) शैक्षिक मापन एवं आंकलन :विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी.
2. पाण्डेय, के. पी. (2009) शैक्षिक मापन एवं आंकलन :विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी.
3. गुप्ता, एस. पी. (2009) अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय कार्यविधि व प्रविधि. शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.
4. एन.सी.ई.आर.टी. (2010) सतत एवं व्यापक आंकलन : सी.बी.एस.ई. द्वारा शिक्षकों के लिए मैनुअल.
5. एन.सी.ई.आर.टी. (2009) नेशनल फोकस ग्रुप एग्जामिनेशन रिफार्म्स ऑफ पोजीशन पेपर.
6. कुमार, अनुज (2012). सतत एवं व्यापक आंकलन चुनौतियाँ और संभावनाओं का अध्ययन एन.सी.ई.आर.टी : भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 33, अंक 1, पृष्ट संख्या 60-67.
7. पाल, बी. एम. (2018). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अध्यापकों के प्रत्यक्षण का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
8. Central Board of Secondary Education (2010). Continuous and Comprehensive Evaluation: Manual for Teachers. Shiksha Kendra, Delhi.
9. N.C.E.R.T. (2005) National Curriculum Framework- 2005. Sri Arvindomarg, New Delhi-110016.
10. N.C.E.R.T. (2006) Position Paper. National Focus Group on Examination Reforms. Sri Arvindo Marg, New Delhi-110016.
11. Govt. of India (1986 & 1992) Nation Policy on Education, Ministry of Human Resource Development, Department of Education, New Delhi.